

संस्कृतं गुह्यं त्रैलोक्यं सादृशं विद्यानां मया आसक्तम् ॥

ASHA ARCHIVES

३३०९

२ संख १८८७ जे वै ग मुकु या १३
को नाकु या धन या या जन
निना द सि मु चि या दा म
या या ख द नु का ॥

अ ३ ॥ साहि विनी सख
न म मि न या वा क हि
ठ को म चू न का निना
द सि मु चि या का य द ॥

अ ४ साहि का य द ॥ य थ
या मि दू या के नि ना द
सि मु चि या वा क डि ठ
को स चू ठ का ति न द ॥

२ अ १ साहि का य द ॥
ना द सि मु चि या ल क
नी क न या क का वा हा या

२ श्री श्री श्री हि म स न सा द
य नि ना द सि मु चि या या
ख थ न

ना म न दू या वा ई २० दा
अ ना कु या धन द न न नि ना
द सि मु चि स द न ॥
सं ८८७ जे वै ग मुकु १३ दू न

२ ऊ डा २ वृ द न ना य स क
या या नि दू थ या डा सा
न द का ॥

श्री ३ हि म स न या क नि
हा थ नि दू
व्य १ न ना ये न डा हा सि खु
या १ डा हा कि किय ता ४४
ले जू द ह नि न स न दू ता

ASHA ARCHIVES

3309

२२२ श्रीमदनारायण विद्यापीठ
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ASHA ARCHIVES

3309

